बी0 ए0, खण्ड–।
अर्थशास्त्र (सम्मान)
प्रथम पत्र

डॉ बिपिन कुमार
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
राम रतन सिंह महाविद्यालय, मोकामा
पी0 पी0 यू0, पटना।
मो0–9430064013
ईमेल–kbipin29@yahoo.Com

प्रश्नः उपभोक्ता व्यवहार सिद्धान्त क्या है? इसकी परिभाषा, अर्थ, विशेषता एंव सूत्र की उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

उत्तरः– उपभोक्ता व्यवहार का अर्थ यह है कि एक उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि पाने के लिए अपनी आय को विभिन्न उपयोगों के लिए आवंटित करता है। इस सिद्धांत के अंतर्गत विभिन्न वस्तुओं की माँग एवं पूर्ति विभिन्न उपयोगो में आय के आवंटन के बारे में विश्लेषण किया जाता है। इस सिद्धांत का विश्लेषण करने से पूर्व हमें सर्वप्रथम इसकी यह जाँच करनी होती है कि उपभोक्ता किसी चीज के किस प्रकार प्राथमिकता देता है। इसके साथ ही हमें उनके द्वारा उपयोग की सभी वस्तुओं द्वारा उनको मिली संतुष्टि को जाँचना होता है।

उपयोगिता (Utility): 'अर्थशास्त्र में उपयोगिता का अर्थ किसी पदार्थ के उपभोग से मिलने वाली संतुष्टि से है अर्थात उपयोगिता किसी वस्तु की वह शक्ति है जो किसी व्यक्ति के आवश्यकता को पूरा करती हो।'

'कुल या समग्र उपयोगिता (Total Utility): इसके साथ ही 'समग्र उपयोगिता' किसी भी दी गयी वस्तु की सभी इकाइयों के उपभोग से मिली कुल संतुष्टि को समग्र या कुल उपयोगिता कहा जाता है – इसे Total Utility (TU) से भी सूचित किया जाता है।

$$TU=MU1+MU2+MU3+ \ldots MUn$$

सीमान्त उपयोगिता (Marginal Utility (MU) : "किसी वस्तु की एक और इकाई का उपभोग करने से मिलने वाली संतुष्टि को सीमान्त उपयोगिता (MU) कहा जाता है– इसे (MU) से सूचित किया जाता है।

$$MU=TUn-TUn-1$$

उपभोक्ता जब वस्तुओं एवं सेवाओं का उपयोग करते हैं तो उससे उन्हें संतुष्टि प्राप्त होती है। इस संतुष्टि को मापने के दो तरीके होते हैः

1. गणनावाचक उपयोगिता दृष्टिकोण (Cardinal Measurement of Utility)
2. कमवाचक उपयोगिता दृष्टिकोण (Ordianal Measurement of Utility)

गणनावाचक उपयोगिता दृष्टिकोण (Cardinal Measurement of Utility): इस तरीके को सीमान्त उपयोगिता विश्लेषण भी कहा जाता है इसके अंतर्गत उपयोगिता को अंको में मापा जा समता है। इस इकाई का नाम युटिल दिया गया है। इसके अंतर्गत जो वस्तुएँ ग्राहक को ज्यादा संतुष्टि देगी उन्हें ज्यादा युटिल दिये जाते है।

सीमान्त उपयोगिता क्षीणता का नियमः इस नियम के अन्तर्गत यदि एक उपभोक्ता किसी वस्तु का ज्यादा उपयोग करता है तो उसे पहले हर इकाई पर ज्यादा संतुष्टि मिलती है लेकिन जैसे ही वह ज्यादा इकाइयों का उपभोग करने लगता है वैसे ही उसे हर इकाई के साथ संतुष्टि कम होती जाती है। इसे निम्न सारणी संख्या–1 में स्पष्ट किया गया हैः'

सारणी संख्या–1

Units of orange	Marginal Utility	Total Utility
1	10	10
2	08	18
3	06	24
4	04	28
5	02	30
6	00	30
7	-1	29

उपरोक्त सारणी में यह स्पष्ट है कि यहाँ, जब संतरे की एक इकाई का उपयोग किया गया तो अधिकतम संतुष्टि मिली लेकिन आगे इकाईयों के साथ संतुष्टि कम होना शुरू हो गयी– यहाँ तक की यह कम इकाई ऋणात्मक हो गयी।

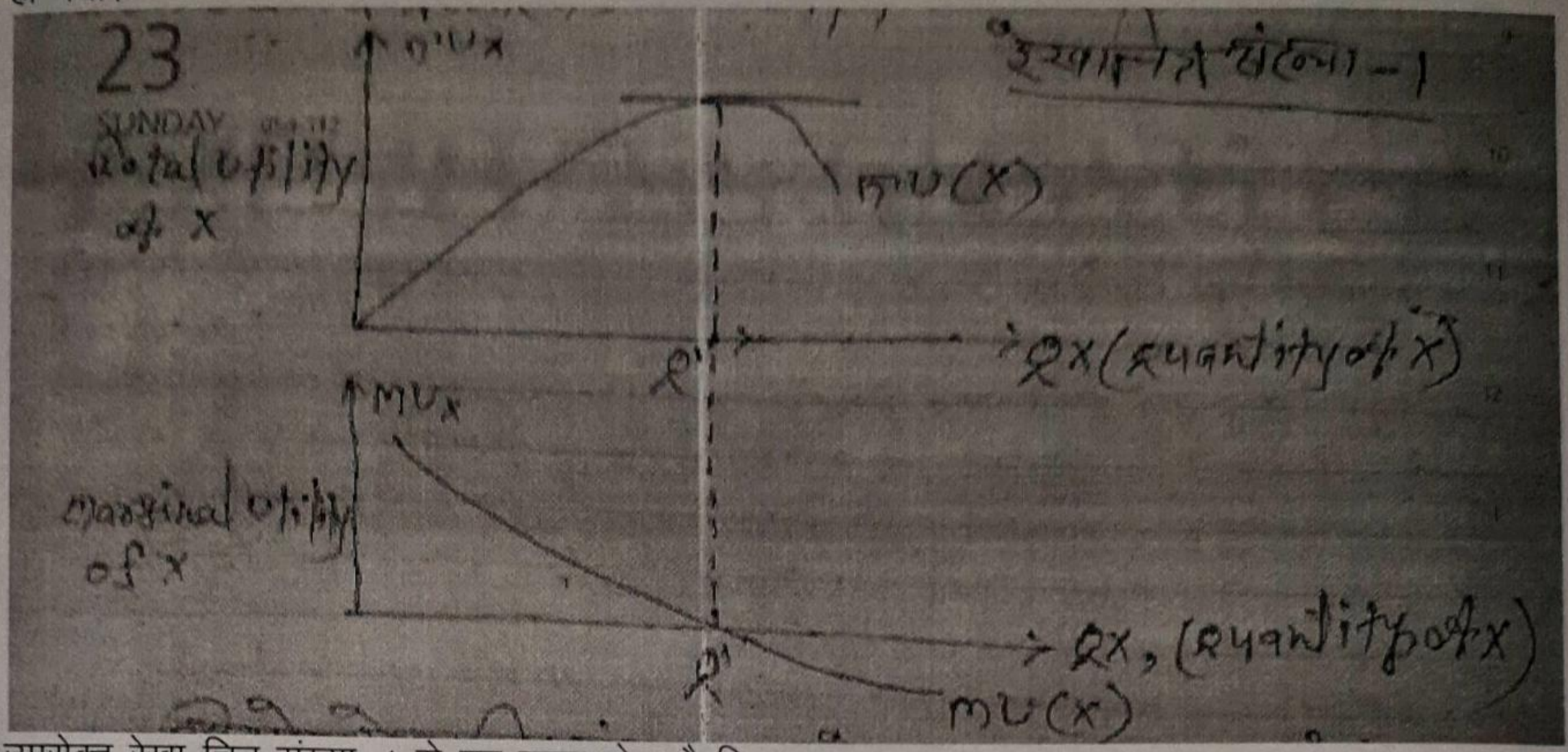

उपरोक्त रेखा चित्र संख्या–1 से यह स्पष्ट होता है कि :

- पहली इकाई का उपयोग करने पर अधिकतम संतुष्टि मिली जिससे MU अधिकतम स्तर पर था– TU ऊपर की ओर बढ़ रहा है।
- इसके बाद MU हर इकाई के साथ कम होने लगा लेकिन यह धनात्मक (+) रहा, जिससे TU घटते दर से उपर की ओर बढ़ रहा है।
- इसके बाद MU शून्य हो गया जब TU अपने अधिकतम स्तर पर पहुँच गया।
- शून्य के बाद MU ऋणात्मक (-) हो गया, जिससे TU नीचे की ओर गिरने लगा।

2. क्रमवाचक उपयोगिता दृष्टिकोण (Ordianal Measurement of Utility)

उपयोगिता को मापने के इस तरीके को अनधिमान बक्र विश्लेषण के नाम से भी जाना जाता है। इसके अनुसार, संतुष्टि को संख्याओं में नहीं मापा जा सकता है। इसके अंतर्गत जो वस्तुएँ ज्यादा संतुष्टि देती है, उनको बड़ी रैंक दी जाती है। इसके अंतर्गत उपभोक्ता अपनी आय किन्ही दो वस्तुओं के उपयोग में व्यय करता है। वह कोशिश करता है कि इन दोनो वस्तुओं का एक ऐसा बंडल चुने जिसमें अधिकतम संतुष्टि मिले (का अनुभवी हो)।

अनधिमान बक्र (Indifference curve)(IC): अनधिमान बक्र के तहत कुछ ऐसे ही बंडल होते है जिनके उपभोग से समान संतुष्टि मिलती (प्राप्त) होती है। उन बंडलों को रेखाचित्र पर दर्शाने पर जो बक्र बनता है वह अनधिमान बक्र (IC) कहलाता है। इसे रेखाचित्र संख्या–2 से समझा जा सकता है:–